कबीर चिन्तन के विविध आयाम

डॉ. आशा यादव

कबीर चिन्तन के विविध आयाम

सम्पादिका

डॉ. आशा यादव

प्रकाशक :

कोशल पब्लिशिंग हाउस

फ़ैज़ाबाद

14. कबीर के दार्शनिक विचार
— डॉ. अनुपम गुप्ता 144-151
15. सामाजिक सरोकार के कवि कबीर
— डॉ. सपना भूषण 152-159
16. कबीर व्यक्तित्व विश्लेषण और जीवन-दर्शन
— डॉ. सुषमा मौर्या 160-163
17. कबीर साहित्य और समाज
— डॉ. नीलम कुमारी 164-168
18. भक्ति आन्दोलन, स्त्री-मुक्ति और कबीर
— दीप्ति सिंह 169-175
19. समसामयिक परिवेश में कबीर
— दीप्ति सिंह 176-180
20. कबीर की प्रासंगिकता
— दीपा वर्मा 181-186
21. कबीर-साहित्य में लोकजीवन
— सुषमा 187-192
22. कबीर साहित्य और समाज
— डॉ. सन्तोष कुमार यादव 193-196
23. कबीर की सामाजिक चेतना
— श्रवण कुमार गुप्ता 197-200
24. कबीर साहित्य और समाज-दर्शन दृष्टिकोण
— ज्योति गुप्ता 201-206
25. कबीर के दार्शनिक विचार
— अजय कुमार मौर्य 207-209

❑❑❑

सामाजिक सरोकार के कवि कबीर

डॉ. सपना भूषण
असिस्टेण्ट प्रोफेसर
वसन्त कन्या महाविद्यालय, कमच्छा, वाराणसी

कबीर एक अर्थ में सम्पूर्ण क्रान्ति के उद्‌गाता थे, सम्पूर्ण जीवन-यज्ञ के ऋत्विक थे तथा सर्व धर्म समभाव के पुरोधा थे, भगवान् बुद्ध के वैदिक कर्म-काण्ड और हिंसावादी, भोगवादी जीव दृष्टि के प्रति विद्रोह किया था। किन्तु 'बहुजन हिताय बहुजन सुखाय' की दिशा में जिस सन्यासोन्मुखी धर्म का प्रचार उन्होंने किया था, वह अपनी एकांगिकता के कारण ही चरमराकर बिखर गया। आचार्य शंकर ने अद्वैतवादी दर्शन का उद्‌घोष कर एक व्यापक जीवन-दृष्टि अवश्य प्रस्तत की, किन्तु संसार के मिथ्यातत्त्व अथवा मायावाद के चिन्तन के कारण वे सम्पूर्ण समाज में उत्क्रान्ति नहीं ला सके। किन्तु कबीर ने बौद्धों की करुणा और प्रेम, शंकर के अद्वैत दर्शन आदि नाथों के योग मार्ग से पर्याप्त रस लेकर एक ऐसे समाज की संरचना की ओर ध्यान दिया, जो मानव मात्र कारण हुआ, जाति धर्म वर्ण के कारण नहीं, यही सम्पूर्ण क्रान्ति कल्याण दृष्टि है।

ऐसे सूर और तुलसी जहाँ वर्ण-व्यवस्था के पोषक लोनायक है, वहाँ कबीर जाति-वर्ण विरोधी व्यवस्था के पुरोधा। कबीर मात्र यह चाहते हैं कि मनुष्य के मूल्यांकन की कसौटी अर्थ, पद या अंश न होकर शुद्ध रूप से कर्म होना चाहिए और यह भी क्यों? क्या इतना ही काफी नहीं है कि हम मानव हैं। मानव से बड़ा सत्य जगत् में और क्या है? मानवता की स्थापना के लिए क्रान्ति के इस युग में कबीर का साहित्य अधिक सार्थकता से हमारे समक्ष प्रस्तुत होता है। कबीर कहते हैं कि-

'उलटी जाति कुल दोउ बिसारी। सुन्न सहज मँहि बुनत हमारी॥[1]

अथ्वा 'एक बुन्द से सृष्टि रची है, को ब्राह्मण को शुद्रा' इस प्रकार कबीर समाज के क्षेत्र में एक ऐसे साम्यवाद के प्रचारक सिद्ध होते हैं जहाँ ऊँच-नीच, ब्राह्मण, क्षत्रिय, शुद्र आदि का भेदभाव न होकर इस साम्य दृष्टि में ही मानव का उद्धार मानते थे। वे कहते थे- ''नीच सम सरिया, ताथै जन कबीर निसतरिया।''[2]

कबीर के काव्य की अनेक पंक्तियाँ उनकी संवेदना का दर्शन कराती हैं, वे

The Indian Renaissance and Swami Vivekananda

Editor :
Dr. Niharika Lal

The Indian Renaissance and Swami Vivekananda

Patron

Prof. Rachna Srivastava

Principal, Vasant Kanya Mahavidyalaya

Editor

Dr. Niharika Lal

2022

Kala Prakashan

B. 33/33 A-1, New Saket Colony,

B.H.U. Varanasi-221005

23	**स्वामी** विवेकानन्द **का** समाजवादी चिंतन एवं नव्य **वेदान्त समाजवाद** *डॉ. कल्पना आनन्द*	.....	187-190
24	**युगद्रष्टा स्वामी** विवेकानन्द *डॉ. दीप्ति सिंह*	.....	191-198
25	**स्वामी** विवेकानन्द : **एक अज्ञात कवि** *डॉ. सपना भूषण*	.....	199-203
26	**स्वामी** विवेकानन्द **जी की धार्मिक दृष्टि** *डॉ0 ममता मिश्रा*	.....	204-209
27	**समकालीन समय में राष्ट्रवादी विमर्श एवं** विवेकानन्द **के विचार** *डॉ0 शशिकेश कुमार गोंड*	.....	210-213
28	**स्वामी** विवेकानन्द **की दृष्टि में मानव-एकता का आदर्श** *अश्विनी कुमार*	.....	214-224
29	**स्वामी** विवेकानन्द **के विचारों की वर्तमान में** प्रासंगिकता *त्रिभुवन मिश्र, अमित कुमार*	.....	225-235
30	**स्वामी** विवेकानन्द **जी के दर्शन की धर्म विषयक अवधारणा** *डॉ0 विभा रानी*	.....	236-246
31	**भारत का** नवनिर्माण : **स्वामी** विवेकानंद **की दृष्टि** *डॉ0 आशा यादव*	.....	247-254
32	**स्वामी** विवेकानंद **की शिक्षा और अनहद नाद** *डॉ0 मीनू पाठक*	.....	255-262
33	**ऊर्जा स्त्रोत** विवेकानन्द *डॉ0 पूनम पाण्डेय*	.....	263-269
34	**स्वामी** विवेकानन्द **के** आध्यात्मिक अनुगूँज में सांगीतिक **स्वर** *डॉ0 सीमा वर्मा*	.....	270-276

★

25

स्वामी विवेकानन्द : एक अज्ञात कवि

✦ डॉ. सपना भूषण

स्वामी जी विलक्षण प्रतिभा एवं अद्भुत दार्शनिक भावों से ओत-प्रोत थे। उनके व्यक्तित्व की विशेषता उन्हें समाज के महान पुरुषों की श्रेणी में श्रेष्ठ स्थान प्रदान करती है। अब तक लाखों शोध कार्य स्वामी जी पर हो चुके हैं, और मुख्य रूप से उनकी धार्मिक दृष्टिकोण को ही सामने लाया जाता रहा है किन्तु कवि के रूप में उन्हें कोई पहचान न मिल सकी।

स्वामी जी के भावों की गहनता, विचारों का उद्वेलन, आन्तरिक जगत से ब्रह्म जगत का द्वन्द्व आदि उन्हें काव्य सृजन की प्रेरणा देता है। जब हम विविध विषयों पर स्वामी जी के काव्य दृष्टि से अवगत होते हैं जो हमें यह अनुभूत होता है कि उनके अन्तः हृदय में कितना आक्रोश, द्वन्द्व, संत्रास, प्रेम, घृणा, आशा, सहृदयता, उत्सर्ग, दया, करुणा, सौहार्द आदि सभी भावों का घात-प्रतिघात निरन्तर चलता रहता है।

उदाहरण- विरले ही तत्वज्ञ! करेंगे शेष अखिल उपहास,
निन्दा भी नरश्रेष्ठ, ध्यान मत दो, निबन्ध अयास

(सन्यासी गीत)[1]

समय की लहरों के साथ,
निरन्तर उठते और गिरते
मैं चला जा रहा हूँ
जिन्दगी के ज्वार-भाटे के साथ-साथ
ये क्षणिक दृश्य एक पर एक आते-जाते हैं।
खोया हुआ जीवन, कैसे रंग की ढेरी।
बहुत देर से उम्र को ज्ञान मिलता है।
जब पहिया हमें दूर पटक देता है,[2]

काव्य की यह पक्तियाँ स्वामी जी के जीवन बोध एवं जीवन संघर्ष का प्रतिबिम्ब प्रस्तुत करती हैं।

स्वदेश भारत के प्रति विवेकानन्द जी का अगाध प्रेम निरन्तर सागर की लहरों की भांति हिल्लोल करता रहा है। स्वामी जी ने भारत के प्रत्येक भूगोल का सूक्ष्मता से निरीक्षण

✦ असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, वसन्त कन्या महाविद्यालय ।

हिन्दी साहित्य का नवीन इतिहास

हिन्दी साहित्य का नवीन इतिहास

डॉ. सपना भूषण
एसोसिएट प्रोफेसर : हिन्दी विभाग
बसन्त कन्या पी.जी. कॉलेज, वाराणसी

जयप्रकाश मिश्र

अशोक कुमार घोष

सपना अशोक प्रकाशन
बी.36/47डी-1 कबीर नगर कालोनी, दुर्गाकुण्ड, वाराणसी-221005

विषय-सूची

अध्याय-1 हिन्दी साहित्येतिहास लेखन की परम्परा एवं काल-विभाजन 1-11

(क) इतिहास का अर्थ एवं स्वरूप, (ख) इतिहास के प्रति भारतीय दृष्टिकोण, (ग) इतिहास के प्रति पाश्चात्य दृष्टिकोण, (घ) हिन्दी साहित्य का इतिहास (ङ) हिन्दी साहित्येतिहास लेखन की परम्परा, **हिन्दी साहित्य का काल विभाजन :** (च) काल विभाजन और नामकरण के आधार, (छ) साहित्येतिहास लेखक का दायित्व, (ज) हिन्दी साहित्येतिहास : काल-विभाजन और नामकरण, **हिन्दी साहित्य के इतिहास ग्रन्थ एक दृष्टि में ।**

अध्याय-2 हिन्दी साहित्य का आदिकाल 12-28

(क) नामकरण, (ख) आदिकाल का परिवेश और परिस्थितियाँ- राजनीतिक परिस्थिति, धार्मिक परिस्थिति, सामाजिक, सांस्कृतिक परिस्थिति, (ग) आदिकालीन साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तिगत विशेषताएँ- 1. साहित्य की विविधता, 2. वाह्याडंबरों का विरोध और अन्तःसाधना पर बल, 3. आश्रयदाता राजाओं की अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन, 4. राजाओं का आपसी संघर्ष, 5. सुन्दर रानियों और राजकुमारियों के लिए संघर्ष, 6. युद्धों का सजीव वर्णन, 7. वीर रस की प्रधानता, 8. वीर और श्रृंगार समन्वय, 9. इतिहास की उपेक्षा, 10. राष्ट्रीय भावना का संकुचित रूप, 11. प्रकृति चित्रण, 12. लोक जीवन की उपेक्षा, 13. भाषा के विविध रूप, 14. विभिन्न छन्दों का प्रयोग, 15. अलंकार योजना, (घ) **प्रमुख कवि एवं उनकी रचनाएँ-** (1) **सिद्ध साहित्य-** 1. सरहपा, 2. शबरपा, 3. लुइपा, 4. डोम्भिपा, 5. कण्हपा, 6. कुक्कुरिया, (2) **नाथ साहित्य-** 1. मत्स्येन्द्रनाथ, 2. गोरखनाथ, 3. जलंधरनाथ, 4. अन्य कवि, (3) **जैन साहित्य-** 1. जैनाचार्य देवसेन, 2. शालिभद्र सूरी, 3. स्वयंभू, 4. पुष्पदंत, 5. हेमचन्द्र, 6. सोमप्रभ सूरि, 7. मेरूतुंग, **प्रमुख रचनाकार और रचनाएँ-** दलपति विजय, नरपति नाल्ह, जगनिक, शारंगधर, चन्दबरदाई, **लौकिक साहित्य-** ढोला मारू रा दूहा, जय चन्द प्रकाश, जयमयंक जस चन्द्रिका, **अमीर खुसरो की रचनाएँ-** पहेलियाँ, मुकरियाँ, गीत, **विद्यापति की रचनाएँ ।**

अध्याय-3 हिन्दी साहित्य का पूर्व मध्यकाल (भक्तिकाल) 29-59

(क) नामकरण, (ख) भक्तिकालीन परिस्थितियाँ- 1. राजनैतिक परिस्थिति, 2. सामाजिक स्थिति, 3. धार्मिक परिस्थिति, (ग) भक्तिकाल का विभाजन, (घ) निर्गुण (निराकार) काव्य- 1. ज्ञानमार्गी शाखा, ज्ञानाश्रयी शाखा की प्रमुख प्रवृत्तियाँ (विशेषताएँ)- (1) निर्गुण, निराकार ब्रह्म की उपासना, (2) गुरू महिमा का वर्णन, (3) जाति-पाति का विरोध, (4) ज्ञान के महत्त्व का प्रतिपादन, (5) वाह्य आडम्बरों का विरोध, (6) अहिंसा और सदाचार का समर्थन, (7) अन्तःसाधना पर बल, (8) भगवान के नाम की महत्ता, (9) आदमी की दीन-हीन दशा का वर्णन, (10) रहस्यात्मक विचारधारा, (11) माया का खण्डन, (12) नारी के वासनामयी स्वरूप की भर्त्सना, (13) नारी के सती और पतिव्रता स्वरूप की प्रशंसा, (14) मानवतावादी चिंतन, **प्रमुख कवि और उनकी रचनाएँ, प्रेममार्गी शाखा (सूफी काव्य), प्रेममार्गी शाखा की प्रमुख प्रवृत्तियाँ (विशेषताएँ)-** (1) भारतीय प्रेमगाथाओं का प्रयोग, (2) मुस्लिम कवि और हिन्दू कहानियाँ, (3) प्रेम की मार्मिक और भावपूर्ण प्रतिष्ठा, (4) ऐतिहासिक कथाएँ - प्रेमाश्रयी, (5) इतिहास और कल्पना का सुन्दर प्रयोग, (6) भारतीय दार्शनिक विचारधारा से प्रभावित, (7) लौकिक प्रेम द्वारा अलौकिक प्रेम की व्यंजना, (8) मसनवी शैली का प्रयोग, (9) वस्तु वर्णन, (10) अद्वितीय विरह-वर्णन, (11) हिन्दू-मुस्लिम एकता का समर्थन, (12) अवधी भाषा का प्रयोग, (13) दोहा और चौपाई छन्द का प्रयोग, **प्रमुख कवि और उनकी रचनाएँ,** (ङ) **सगुण भक्तिकाव्य, रामभक्ति शाखा, रामभक्ति शाखा की प्रमुख प्रवृत्तियाँ (विशेषताएँ)-** 1. राम की भक्ति का उपदेश 2. राम के शक्तिशील सौन्दर्य का वर्णन 3. भक्ति का स्वरूप, 4. समन्वयवादी प्रवृत्ति, 5. आदर्शवाद की स्थापना, 6. विधि सम्मत धर्म-आचरण का समर्थन, 7. तत्कालीन समाज का यथार्थ चित्रण, 8. गुरु का महत्त्व, 9. सेवक-सेव्य भाव की भक्ति, 10. दार्शनिकता, 11. प्रबन्धात्मक काव्यों की रचना, 12. अवधी भाषा का प्रयोग, 13. मर्यादा की स्थापना, **प्रमुख कवि और उनकी रचनाएँ, रामभक्ति शाखा के अन्य कवि और उनकी रचनाएँ,** (च) **कृष्णभक्ति शाखा, कृष्णभक्ति काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ (विशेषताएँ)-** 1. कृष्णभक्ति का उपदेश, 2. निर्गुण ब्रह्म का विरोध, 3. कृष्ण के बाल सौन्दर्य का वर्णन, 4. संयोग श्रृंगार वर्णन, 5. वियोग श्रृंगार वर्णन, 6. वात्सल्य रस का प्रयोग, 7. मुक्तक एवं गीति शैली का प्रयोग, 8. ब्रजभाषा का प्रयोग, 9. सखा भाव की भक्ति, 10. काव्य में सुदृढ़ कला पक्ष, 11. गुरु का महत्त्व, 12. नाम स्मरण का महत्त्व, **प्रमुख कवि और उनकी रचनाएँ-** 1. सूरसागर, 2. साहित्य लहरी, 3. सूर सारावली, **कृष्ण भक्तिभाषा के अन्य कवि और उनकी रचनाएँ ।**

अध्याय-4 हिन्दी साहित्य का उत्तर मध्यकाल (रीतिकाल) 60-86

(क) नामकरण, (ख) रीतिकालीन परिस्थितियाँ- 1. राजनीतिक परिस्थिति, 2. सामाजिक परिस्थिति, 3. धार्मिक परिस्थिति, 4. सांस्कृतिक परिस्थिति, (ग) रीतिकाल का विभाजन, (घ) रीतिबद्ध काव्यधारा, **रीतिबद्ध काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ (विशेषताएँ) -** 1. सौन्दर्य वर्णन, 2. श्रृंगार वर्णन, 3. दरबारी संस्कृति, 4. सामाजिक उपेक्षा, 5. अलंकरण की प्रवृत्ति, **प्रमुख रीतिबद्ध कवि और उनकी रचनाएँ -** 1. महाराज जसवन्त सिंह, रचनाएँ- 1. भाषा भूषण, 2. चिंतामणि त्रिपाठी, 3. मतिराम, 4. कुलपति मिश्र, 5. पद्माकर, **अन्य प्रमुख कवि और उनकी रचनाएँ,** (ङ) रीतिमुक्त काव्यधारा, **रीतिमुक्त काव्यधारा की प्रमुख प्रवृत्तियाँ (विशेषताएँ) -** 1. प्रेमानुभूति, 2. एकनिष्ठ प्रेम की पराकाष्ठा, 3. सजीव संयोग वर्णन, 4. अनुपम सौन्दर्य वर्णन, 5. व्यक्तिगत प्रेम का वर्णन, 6. परम्परागत रूढ़ियों का विरोध, 7. प्रेम में वियोग की प्रमुखता,

Impact Factor : 5.029

ISSN : 2250-1193

Year 9, No. 4
April, 2019

Anukriti अनुकृति

An International Peer Reviewed Refereed Research Journal

PEER REVIEWED JOURNAL

Reg. No. 694/2009-10 Impact Factor : 5.029 ISSN : 2250-1193

Anukriti

An International Peer Reviewed Refereed Research Journal

Vol. 9, No. 4 Year-9 April, 2019

PEER REVIEWED JOURNAL

Editor in Chief

Prof. Vijay Bahadur Singh

Hindi Department

Banaras Hindu University

Varanasi

Editor

Dr. Ramsudhar Singh

Ex Head, Department of Hindi

Udai Pratap Autonomous College

Varanasi

Published by

SRIJAN SAMITI PUBLICATION

VARANASI (U.P.), INDIA

Mob. 9415388337, E-mail : anukriti193@rediffmail.com, Website : anukritijournals.com

✍	साठोत्तरी हिन्दी उपन्यास एवं परिवर्तनशील महानगरीय परिवेश **डॉ0 पूनम तिवारी**	59-62
✍	प्रेमचन्द का कथा साहित्य और नारी–मुक्ति का संघर्ष **आभा पाण्डेय**	63-66
✍	Protestant Missionaries' Educational Activism in India **Dr. Sanjay Kumar Singh**	67-70
✍	Role of RUSA in Higher Education for Tribals' in Jharkhand **Dr. Vinita Bankira**	71-76
✍	Rights and Fundamental Rights: Ambedkar and the Constituent Assembly **Manish Kumar**	77-80
✍	कुपोषण **डॉ0 कल्पना अग्रवाल**	81-82
✍	डॉ० अम्बेडकर के विधि संबंधी विचारों की प्रासंगिकता **डॉ0 समीर कुमार**	83-86
✍	महादेवी वर्मा के काव्य में प्रकृति के विविध रूप **डॉ0 रीना त्रिपाठी**	87-90
✍	नागार्जुन के उपन्यासों में चित्रित नारी **डॉ0 सपना भूषण**	91-92
✍	आषाढ़ का एक दिन : सार्थक वर्तमान की खोज **डॉ0 विद्याशंकर सिंह**	93-98
✍	अधिगम का संज्ञानात्मक स्वरूप **प्रवीण कुमार**	99-104
✍	शोध स्तर पर संचालित पाठ्यक्रम आधारित कार्यक्रम की प्रासंगिकता का अध्ययन **विरेन्द्र कुमार सिंह**	105-110
✍	उच्च शिक्षा में N.S.S. की भूमिका **डॉ0 देवदत्त शुक्ला**	111-112
✍	A Comparative Study on Role of Parents whose Children Participate and whose Children do not Participate in Special Olympics Games for Social Development of CWID **Krishna Kumar Srivastava & Dr. K. Saileela**	113-116
✍	प्लाविनी प्राणायाम का मिथक एवं उसका अन्वेषण **डॉ0 दिलीप तिवारी**	117-120
✍	तुलनात्मक राजनीति में उत्पन्न समस्याओं का विश्लेषणात्मक परिचय **ऋषिकान्त पाण्डेय**	121-122
✍	टीकाकारों और निवन्धकारों की दृष्टि में स्त्री धन का स्वरूप **डॉ0 अमर नाथ सिंह एवं आनन्द प्रताप सिंह**	123-126
✍	हजारीप्रसाद द्विवेदी के कथा–साहित्य में स्त्री **डॉ0 प्रीति**	127-130

Reg. No. 694/2009-10
Anukriti (An International Peer Reviewed Refereed Research Journal), Vol. 9, No. 4, April, 2019
Impact Factor : 5.029
ISSN : 2250-1193

नागार्जुन के उपन्यासों में चित्रित नारी

डॉ0 सपना भूषण
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, वसन्त कन्या महाविद्यालय, कमच्छा, वाराणसी

नागार्जुन छायावादोत्तर युग के एक ऐसे साहित्यकार के रूप में उभर कर सामने आते हैं जिन्होंने जमीन को हमेशा पकड़ कर रखा। लगभग अड़सठ वर्ष (सन् 1929 से 1997) तक ये रचनाकर्म से जुड़े रहें। जिस प्रकार हम प्रेमचंद के कथा–साहित्य में जमीन से जुड़े हुए तथ्यों का अवलोकन करते हैं "ठीक उसी प्रकार नागार्जुन के कथा–साहित्य में भी हमें वहीं पृष्ठभूमि दिखाई देती है, नागार्जुन और प्रेमचंद के कथा पात्रों में अन्तर इतना ही है कि प्रेमचंद के कथा पात्र लगातार समस्याओं से घिरे हुए उनसे जुझते हुए दिखाई देते हैं, उनमें इतनी हिम्मत नहीं है कि वह खुलकर अपने प्रतिद्विन्द्वियों के सामने आएं और उनका विरोध करें। हाँ मगर वह नये रास्ते की तलाश अवश्य करते हैं। दूसरी तरफ नागार्जुन के उपन्यासों के पात्र समस्याओं से घिरे होने के बाद भी ना तो वह परिस्थिति से समझौते करने को तैयार होते हैं और ना ही वह उनके सामने घुटने ही टेकते हैं बल्कि वह अपनी साहस व हिम्मत का प्रदर्शन करते हुए खुलकर अपने विरोधियों के सामने आते हैं और डटकर उनका मुँहतोड़ जवाब देते हैं।

मिथिलांचल के दरभंगा जिले के सतलखा ग्राम में जन्में नागार्जुन ने मिथिलांचल को ही अपने उपन्यासों का आधार बनाया है। समाजवादी चेतना इनके उपन्यासों का खास आधार रही है, इस उपन्यासकार ने अपने लेखन कौशल के माध्यम से प्रधान पात्रों के साथ–साथ गौण पात्रों को भी पाठक वर्ग के लिए अविस्मरणीय बना दिया है। नागार्जुन के उपन्यासों की नारी पात्र समस्त भारतीय नारी का प्रतिनिधित्व करती है। भारतीय स्त्री के शोषण का बड़ा ही मार्मिक और सजीव चित्रण इनके उपन्यासों में दृष्टिगोचर होता है जो यशपाल की हमें याद दिला देता है। इनमें विधवा विवाह, अनमेल विवाह, वेश्यावृत्ति, बहुपत्नी प्रथा और स्त्री के क्रय–विक्रय संबंधी समस्याओं पर गंभीर रूप से प्रकाश डाला गया है, लोकजीवन, प्रकृति और समकालीन राजनीति इनकी रचनाओं के मुख्य विषय रहे हैं। विषय की विविधता और प्रस्तुति की सहजता नागार्जुन के रचना संसार को नया आयाम देती है।

देश की स्वतंत्रता के दशक बीत जाने पर भी जब देश की परिस्थितियां बेहतर नहीं होती तो देश की दशा पर नागार्जुन की लेखनी कराह उठती है–

"अंदर संकट, बाहर संकट, संकट चारों ओर
जीभ कटी है, भारतमाता मची न पाती शोर
देखो धँसी–धँसी ये आँखें, पिचके–पिचके गाल
कौन कहेगा, आज़ादी के बीते तेरह साल?"[1]

नागार्जुन के उपन्यासों की प्रत्येक नारी पात्र अपने सम्पूर्ण मौलिक चारीत्रिक वैशिष्ट को लेकर प्रस्तुत होती है, वह अपनी वजूद को खोना नहीं चाहती। कुछ को छोड़कर समस्त स्त्री पात्र अपने व्यैक्तिक महत्ता, श्रेष्ठता और साहस को समाज के समकक्ष सराहनीय रूप में प्रकट करती हैं। इन्होंने स्वयं अपने कठिन परिश्रम से मार्ग को सजा–संवारकर अपने योग्य बनाया है, अपने राह में आने वाले कंकड़ों को चुन–चुनकर साफ किया है, इन स्त्री पात्रों की तुलना में अधिकतर पुरुष पात्र कापुरुष तथा नपुंसक के रूप में चित्रित किए गए हैं। ये स्त्री पात्र यौन शोषण से प्रताड़ित होकर टूटती नहीं अपितु अदम्य साहस का परिचय देते हुए, यह भविष्य को उज्ज्वल बनाने का सफल प्रयास करती हैं, नागार्जुन के उपन्यासों के कुछ प्रधान पात्र की चर्चा हम इस सन्दर्भ में कर सकते हैं।

रतिनाथ की चाची

गौरी–यह एक ऐसी स्त्री है जिसका जीवन अनेमल विवाह के कारण विनाश के अंधकार में डूबते चला जाता है, गौरी के पास रूप–सौन्दर्य की कोई कमी नहीं है, फिर भी भाग्य की विडम्बना और 'कुलीन वर' की सनक में पिता के द्वारा वह एक दमे के रोगी के साथ ब्याह दी जाती है। पिता के इस भूल के कारण उसका समस्त जीवन एक अभिशाप बनकर रह जाता है क्योंकि असमय ही वह विधवा हो जाती है फिर एक अमावस्या की अंधेरी रात में उसे अपनी देवर की वासना का शिकार होना पड़ता है। परिणाम स्वरूप वह गर्भवती हो जाती है। जयनाथ (देवर) एक ऐसा कायर पुरुष हैं जो वासना की पूर्ति तो करना जानते हैं लेकिन उसका उत्तरदायित्व वहन करना नहीं जानते हैं, गौरी अमावस की उस भयावह रात को

Session - 2023-24

Book Chapter

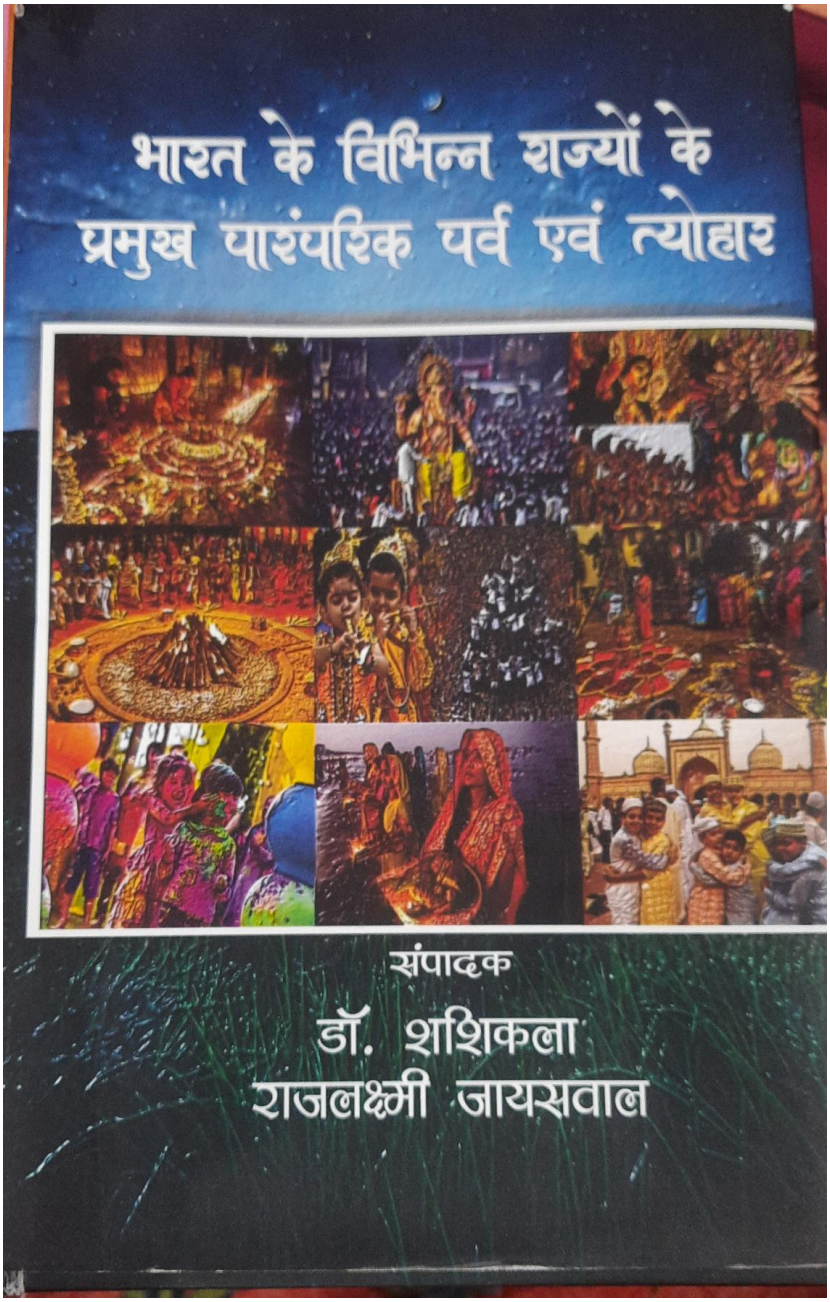

सर्वाधिकार सुरक्षित
लेखक व प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस पुस्तक का कोई भी अंश, किसी भी रूप में या किसी भी प्रकार से इलेक्ट्रानिक, मशीनी या फ़ोटोकॉपी या रिकॉर्डिंग द्वारा प्रतिलिपित या प्रेषित नहीं किया जा सकता।

आईएसबीएन : 978-93-92356-35-3

प्रकाशक : **समकालीन प्रकाशन**
फ्लैट नं. 02, प्रथम तल, अंसारी मार्केट,
दरियागंज, नई दिल्ली–110002
Email- sales.samkaleenprakashan@gmail.com
दूरभाष–7827484578

संस्करण : प्रथम संस्करण, 2023
आवरण : ग्रैफ़िकल हाउस
सर्वाधिकार : © संपादक
मूल्य : ग्यारह सौ रुपये मात्र
मुद्रक : द विनायक डिजिटल प्रिंटर्स

Bharat Ke Vibhinna Rajyon Ke Pramukh Paramparik Parv Avam Tyohar
Edited By: Dr. Shashikala, Rajlakshmi Jaisawal
Rs. 1100/-

अनुक्रम

कर्नाटक के पर्व एवं त्योहार सांस्कृतिक वैभव के प्रतिबिंब हैं
-प्रो. उषारानी राव 19

झारखण्ड के प्रमुख पर्व एवं त्योहार
-डॉ. चंद्रिका ठाकुर 28

जीवंत और अनंत रंगों की धरोहर 'त्योहारों की भूमि': गुजरात
-डॉ. अंशु शुक्ला 34

संस्कृति और सभ्यता का शहर गोवा
-डॉ. सपना भूषण 48

मेघालय राज्य में प्रचलित प्रमुख पारंपरिक पर्व
-डॉ. आरती कुमारी 55

उत्तर प्रदेश के प्रमुख व्रत एवं त्योहार : होली के विशेष संदर्भ में
-डॉ. शुभांगी श्रीवास्तव 65

असम : लोक संस्कृति और पर्व
-डॉ. अंकिता विश्वकर्मा 78

हरियाणा के व्रत एवं त्योहार
-डॉ. प्रीति विश्वकर्मा 86

तेलंगाना संस्कृति की आत्मा बतुकम्मा पर्व
-डॉ. किरण शास्त्री 96

नागालैंड : उत्सव की भूमि
-डॉ. गीता राय 104

संस्कृति और सभ्यता का शहर गोवा

-डॉ. सपना भूषण
एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
वसंत कन्या महाविद्यालय, कमच्छा, वाराणसी

सार संक्षेपण-

'गोवा' शहर का नाम लेते ही मानस पटल पर समुद्र के किनारे बसा सुरम्य अनुपम प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण अनूठी संस्कृति से सुसज्जित नगर 'गोवा' का दृश्य उपस्थित हो जाता है। आजादी से पहले यह प्रांत पुर्तगालियों व फ्रांसीसियों का उपनिवेश क्षेत्र रहा, जिससे आज भी यहाँ के रहन-सहन, भाषा व खान-पान पर पश्चिमी सभ्यता संस्कृति का पूरा प्रभाव दिखाई देता है। "सन् 1542 में यहाँ सेंट फ्रांसिस जेवियर का आगमन हुआ। उन्होंने यहाँ रहकर ईसाई धर्म का प्रचार-प्रसार किया। गोवा में 80 प्रतिशत लोग ईसाई हैं। गोवा में टाइट अकादमी की स्थापना की गई है। सांस्कृतिक गतिविधियों को बढ़ावा देने तथा कलाकारों को सहायता देने के लिए कला सम्मान, कलाकार कृतिदन्यता निधि जैसी विभिन्न योजनाएँ चलाई जा रही हैं।"[1] गोवा वासी आमतौर पर खुशमिजाज प्रवृत्ति के होते हैं। "गोवा राज्य के मूल निवासियों को गोअन कहा जाता है।"[2] गोवा वासियों की ये खास विशेषता है कि यहाँ पर धार्मिक कट्टरवाद देखने को नहीं मिलता है वह अपनी धार्मिक पहचान से पहले गोवा के हैं उसके बाद किसी धर्म या संप्रदाय के।

मूल शब्द- संस्कृति, धर्म, परंपरा, फ्रांस, रोमांच, गोवन-नेवरी, संगीत-नृत्य।

शोध आलेख- भारत का सबसे छोटा राज्य गोवा है जो पश्चिमी घाट के सह्याद्री श्रेणी और भारत के पश्चिमी तट पर अरब सागर के बीच स्थित है, जो खूबसूरत बीचों से भरा हुआ है। गोवा की राजधानी पणजी है। यहाँ प्रत्येक वर्ष लगभग 60 लाख पर्यटक घूमने के लिए आते हैं। "इसे **रोम ऑफ दी इस्ट** (पूर्व का रोम) या **भारत के मियामी** के रूप में भी जाना जाता है।"[3] गोवा खूबसूरत बीचों, कभी खत्म ना होने वाले पार्टियों, रोमांचित कर देने वाली नाइटलाइफ, वाटर स्पोर्ट, खान-पान, रहन-सहन, वेशभूषा आदि से परिपूर्ण है। लगातार 450 वर्षों तक पुर्तगालियों के शासन के अधीन और उनकी संस्कृति को अपनी आँखों से देखने वाला यह भारत का एकमात्र राज्य है। गोवा का प्रमुख बंदरगाह और व्यापक नदी इसका महत्त्व बढ़ा देती है। गोवा राज्य की क्षेत्रीय भाषा कोंकणी है। पर अब कुछ सालों से यहाँ कोंकणी कम और अंग्रेजी ज्यादा लोग बोलते हैं। स्कूल में भी बच्चों के साथ पूर्णतया अंग्रेजी में ही बातें की जाती है। यहाँ ईसाई और हिंदू दोनों धर्म के लोग रहते हैं। मुस्लिम धर्म के लोगों की संख्या कम है। यहाँ पर प्रेम और सौहार्द का वातावरण हमेशा बना रहता है। यहाँ लोग एक दूसरे का सम्मान करते हैं। यहाँ की कानून व्यवस्था भी अच्छी है। विधि की कड़ी व्यवस्था के कारण यहाँ पर स्त्रियाँ स्वच्छंद होकर विचरण करती हैं। यहाँ रेप न के बराबर होते हैं। इस तरह के जघन्य अपराधों के लिए यहाँ पर कठोर दंड का प्रावधान किया गया है। जो अन्य राज्यों के लिए एक उदाहरण प्रस्तुत करता है। यहाँ के लोगों में लालच का भाव देखने को नहीं मिलता है लोग छोटे काम करने में भी शर्मिंदगी का अनुभव नहीं करते सभी आत्मनिर्भर होकर स्वयं अपने बल पर जीवन यापन करते हैं।

"कैथोलिक इनसाइक्लोपीडिया में 1909 के आँकड़ों के अनुसार, कुल जनसंख्या 365,291 (80.33%) में से कुल कैथोलिक जनसंख्या 293, 628 थी।"[4] "गोवा के भीतर, गोवा प्रवास के कारण ईसाई धर्म में लगातार गिरावट आई है, और गोवा के विलय के बाद से बड़े पैमाने पर गैर-गोवा अप्रवासन के कारण अन्य धर्मों में लगातार वृद्धि हुई है। (गोवा में मूल गोवावासियों की संख्या गैर-गोवावासियों से अधिक है।)"[5] "जनसांख्यिकीय परिवर्तन में धर्मांतरण की भूमिका बहुत कम दिखती है। 2011 की जनगणना के अनुसार, 1,458,545 लोगों की आबादी में, 66.1% हिंदू थे, 25.1% ईसाई थे, 8.3% मुस्लिम थे और 0.1% सिख थे।"[6]

गोवा का एक आकर्षक ऐतिहासिक अतीत है जो लगभग तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व का है। मौर्य साम्राज्य का एक प्रमुख हिस्सा, गोवा अपने प्राकृतिक बंदरगाह और विस्तृत नदी आधार के कारण अत्यंत

महत्त्वपूर्ण रहा। 1987 ई. में ही गोवा को एक स्वतंत्र राज्य का स्थान मिला और क्षेत्रीय भाषा कोंकणी को भारत की आधिकारिक भाषाओं में से एक के रूप में मान्यता दी गई।

गोवा : जीवन और संस्कृति

भारत के पश्चिमी तट पर बसा यह छोटा-सा राज्य अपने सुलभ बंदरगाहों के कारण हमेशा से व्यापार का सर्वोत्तम केंद्र रहा। पूर्व और पश्चिम के सुंदर सामंजस्य के साथ, गोवावासियों ने दोनों दुनियाओं का सर्वश्रेष्ठ प्राप्त किया। गर्मजोशी भरे, खुशहाल लोगों की सभ्यता पूरे भारतवर्ष में अद्वितीय है। गोवा में ईसाई, कैथोलिक, मुस्लिम और हिंदू जैसे विभिन्न धर्मों का सुखद एवं सुंदर मिश्रण देखने को मिलता है जो एक साथ सद्भाव से रहते हैं। "अपनी सदियों पुरानी परंपराओं और रीति-रिवाजों का पालन करते हुए, गोवावासी पश्चिम के प्रबल प्रभाव के कारण, गोवा की मानसिकता सदैव अधिक समसामयिक रही है। उनकी समृद्ध विरासत संस्कृति तेजी से बढ़ते औद्योगीकरण से धूमिल नहीं हुई है जो शेष भारत में आम हो गई है। स्वादिष्ट भोजन और मनभावन संगीत के साथ आजीविका और धार्मिक त्योहारों का जश्न मनाने वाले, स्थानीय लोग विनम्र, गर्मजोशी भरे और मौज-मस्ती करने वाले व्यक्ति हैं।"[7]

समाज के भीतर कोई धार्मिक बाधा लाए बिना सभी प्रमुख त्योहारों को उत्साह के साथ मनाते हैं। जो भारत के अन्य क्षेत्रों में हमें देखने को नहीं मिलता।

गोवा की खाद्य संस्कृति

भोजन और पेय गोवा की जीवंत संस्कृति की पारदर्शिता को दर्शाता है। भोजन परिवारों को एक साथ लाता है, यह रिश्तों को जोड़ने का कार्य करता है। मछली करी और चावल यहाँ का विशेष रूप से पारंपरिक भोजन है। इस वैशिष्ट्य के अतिरिक्त, गोवा ताजा पकड़े गए समुद्री भोजन के मिश्रित बैग के लिए भी प्रसिद्ध है। "झींगे, केकड़े, किंगफिश अपने पारंपरिक मसालेदार अचार के साथ स्थानीय लोगों के लिए एक स्वादिष्ट व्यंजन हैं। गोवावासियों के लिए एक और त्योहारी पसंदीदा उनका बीफ और पोर्क रोस्ट है, जिसे क्रिसमस के दौरान जरूर आजमाना चाहिए, जिसे किण्वित काजू के साथ बनाई गई गोवा की प्रसिद्ध शराब फेनी के साथ सबसे अच्छा जोड़ा जाता है। जब दोस्त एक साथ मिलते हैं या उत्सव के

दौरान अन्य व्यंजन जैसे बेबिनका (एक बहुस्तरीय मिठाई) और खटखटे आवश्यक होते हैं।"[8] "सन् 1510 में पुर्तगाली जनरल अल्बुकर्क ने बीजापुर के सुल्तान से गोवा को हासिल कर लिया। इसके बाद इस क्षेत्र में आलू, मिर्च, टमाटर, काजू, अनानास, डबल-रोटी, सिरका और विभिन्न प्रकार के मांस जैसी अनूठी पाक वस्तुओं का उपयोग होने लगा।"[9] इस राज्य की बढ़ती हुई सुंदरता और समृद्धि के कारण इसे गोल्डन गोवा के रूप में जाना जाने लगा।

स्थानीय लोगों का व्यवसाय

भारत के महानगरीय शहरों के विपरीत, गोवा के स्थानीय लोग एक सुंदर और आरामदायक जीवन जीते हैं, हर पल को पूरी तरह से जीते हैं। इसके स्थान का लाभ उठाते हुए, स्थानीय लोगों का सबसे आम व्यवसाय मछली पकड़ना है। उपजाऊ भूमि और प्रचुर जल आपूर्ति के कारण, अक्सर स्थानीय लोग खेती करते हैं और काजू, नारियल, कटहल और अन्य अनाज जैसे सामान्य खाद्य पदार्थ उगाते हैं। इसके अलावा, गोवा में अगला सबसे अधिक मांग वाला व्यवसाय स्थानीय रूप से संचालित शेक, गेस्ट हाउस और पर्यटक गाइड व्यवसाय है। बेमौसम में खुद को बनाए रखने के लिए वे स्थानीय फसलों और अनाज की खेती करते हैं।

गोवा के हस्तशिल्प

ऐसे क्षेत्र में जहाँ पर्यटन मुख्य अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने वाला है, छोटे हस्तशिल्प और स्मारिका आभूषण स्थानीय बाजारों में लोकप्रिय वस्तुएँ होती हैं। यहाँ के कुशल कारीगर घर की सजावट के लिए शानदार आभूषण, फ्रेम और शोपीस बनाने के लिए समुद्र तट पर पाए जाने वाले गोले और नारियल की खाल का पुनः उपयोग करते हैं। इसके अलावा मिट्टी के बर्तन, टेराकोटा, बांस की लकड़ी का काम, क्रोकेट और कढ़ाई, फाइबर शिल्प, बाटिक प्रिंट, धातु, एम्बासिंग, पीतल और चांदी के आभूषणों और कलाकृतियों के रूप में व्यापक पैमाने पर व्यापार किया जाता है जो दुनिया भर से पर्यटकों को आकर्षित करता है।

गोवा का नृत्य और संगीत

गोवा में नृत्य और संगीत गोवा की कला और संस्कृति का अहम हिस्सा है जो यहाँ पर आने वाले पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करता

है यहाँ का कला प्रदर्शन अन्य राज्यों से बिल्कुल भिन्न है यहाँ लोक नृत्य और संगीत का आयोजन दोनों धार्मिक त्योहारों या विशेष अवसरों पर किया जाता है। "गोवावासियों को प्रदर्शन कलाओं से विशेष लगाव है। भारतीय और पश्चिमी नृत्य रूपों का एक सुंदर मिश्रण, गोवा नृत्यों में फुगड़ी, ढालों और कुनबी शामिल हैं जो गोवा में पुर्तगाली युग के हैं। राज्य में लोक नृत्य और संगीत धार्मिक त्योहारों और हर्षोल्लासपूर्ण कार्यक्रमों दोनों के लिए प्रस्तुत किए जाते हैं।"[10]

देखनी नृत्य

घूमक पहनकर प्रस्तुत किया जाने वाला यह नृत्य रूप एक गीत के साथ होता है जिसकी जड़ें पश्चिमी सभ्यता में है। जबकि नृत्य का मूल भारतीय है। देखनी नृत्य केवल समुदाय की महिलाओं द्वारा किया जाता है और यह गोवा की सबसे प्रसिद्ध परंपराओं में से एक है।

गोफ़ टोलगाडी और शिग्मो

ये कुछ नृत्य रूप हैं जो गोवा समुदाय के लिए बहुत स्थानीय हैं "जो गोयल समुदाय के द्वारा किया जाता है।"[11] और आमतौर पर वसंत के महीनों के दौरान किसानों और उनकी फसलों के लिए एक उपहार और उल्लास के रूप में प्रस्तुत किए जाते हैं। गोफ़ में विभिन्न रंगों के साथ चोटी बुनना शामिल है और अक्सर गोवा के कैनाकोना तालुका (प्रांत) में रहने वाले लोगों द्वारा किया जाता है।

"शिग्मो को पारंपरिक नृत्यों द्वारा चिह्नित किया जाता है जो ढोल, ताशा या झांझ की थाप के साथ रंगीन पोशाक पहनकर किए जाते हैं। गोवा की सड़कों पर झाँकियों के जुलूस देखे जा सकते हैं, जिन पर हम जोशपूर्ण अभिनेताओं को गोवा के इतिहास का संदेश देते हुए अभिनय करते हुए देख सकते हैं।"[12]

गोवा का पारंपरिक पोशाक

गोवा के लोग आमतौर पर सूती कपड़े पहनते हैं जो वहाँ की गर्म जलवायु के अनुकूल होते हैं। यहाँ की कैथोलिक महिलाएँ गाउन पहनती हैं तथा हिंदू महिलाएँ नौवारी साड़ी पहनती हैं। यहाँ के आदिवासी क्षेत्रों में आज भी वल्कल नामक परिधान पहना जाता है (मोतियों की एक स्प्रिंग और एक पत्तेदार लंगोटी)। गोवा में महिलाओं की पारंपरिक पोशाक में 9 गज की साड़ी जिसे 'पानो भाजू' भी कहा जाता है और पूरे पहनावे को संतुलित करने के लिए कुछ आभूषण शामिल हैं। मछुआरों के पास कोई विशेष पोशाक नहीं होती है, लेकिन आमतौर पर उन्हें चमकीले सूती शर्ट के साथ हाफ पैंट पहने देखा जाता है। गोवा में जनजातीय लोगों की पोशाक में एक लंगोटी शामिल होती है जिसे 'कश्ती' के नाम से जाना जाता है, जिसमें उनके कंधों के चारों ओर एक कंबल लपेटा जाता है। "महिलाएँ अपने 'कुनबी पल्लू' को बांधते हुए एक बंधी हुई साड़ी पहने हुए नजर आती हैं जो अलग ही पहनावा रखती हैं।"[13] और उनकी ड्रेसिंग शैली बहुत विशिष्ट और आकर्षक होती है।

गोवा के इतिहास में नजर डालने पर हम पाते हैं कि पुर्तगालियों द्वारा उपनिवेशित होने के अलावा भी गोवा राज्य में एक आकर्षक ऐतिहासिक अतीत छुपा हुआ है, जिसका वर्णन तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व की तारीखों में मिलता है। गोवा मौर्य साम्राज्य का एक अभिन्न हिस्सा हुआ करता था क्योंकि यहाँ के प्रमुख प्राकृतिक बंदरगाह और व्यापक नदी इसका महत्त्व बढ़ा देती थी। गोवा को सन् 1987 में एक स्वतंत्र राज्य का दर्जा दिया गया था। साथ ही साथ गोवा राज्य की क्षेत्रीय भाषा कोंकणी को भारत की आधिकारी भाषाओं में शामिल किया गया था। गोवा राज्य बहु-सांस्कृतिक प्रभावों के बावजूद भी एक विशिष्ट संस्कृति का दावा प्रस्तुत करता है।

निष्कर्ष

उपर्युक्त वर्णन से यह स्पष्ट होता है कि गोवा की संस्कृति पूरे भारत में सबसे समृद्ध एवं लोगों के मन को लुभाने वाला है। रंगीन व सुंदर संस्कृति-सभ्यता को संजोए हुए गोवा राज्य अपने अनूठे अंदाज में हमें नजर आता है। भारत में जो शानदार समुद्र तटों, शानदार नाइटलाइफ, चर्च, गिरजा घरों के पुराने शहर के आकर्षण हरे-भरे ताड़ के पेड़, काजू के बागान, जीवंत कार्निवल विश्व बाजार शानदार व्यंजन मनोरंजक गतिविधियों की एक सुरम्य झाँकी प्रस्तुत करता है। पार्टी राज्य गोवा संस्कृति के धड़कन के साथ धड़कता है, क्योंकि यहाँ हर दिन एक कार्निवल होता है खुशमिजाज नाइटलाइफ के लिए मशहूर गोवा, मौज मस्ती के लिए अत्यंत प्रसिद्ध है। गोवा ने हमेशा शक्तिशाली राजवंशों, व्यापारियों, भिक्षुओं और मिशनरियों को आकर्षित किया है। विभिन्न बस्तियों युद्ध और राज्यों की कहानियों से घिरा हुआ यहाँ का इतिहास एक के बाद एक होने वाली घटनाओं

का साक्षी रहा है। "गोवा भारत के 29वें राज्यों में से एक है इस जगह की संस्कृति और अद्वितीय है क्योंकि यह फ्रांसीसी, पुर्तगाली, डच और इजराइल जैसे राज्य वर्षों से विरासत में मिली है।"[14]

सन्दर्भ :

1. गोवा की संस्कृति https://jugaadinnews.com (Blog)
2. गोवा की संस्कृति भारतकोश ज्ञान का हिन्दी महासागर m.bharatdiscovery.org
3. http://medium.com
4. अर्नेस्ट हल (1909) "गोवा का महाधर्म प्रांत" कैथोलिक विश्वकोश वॉल्यूम 6, न्यूयॉर्क! रॉबर्ट एपलटन कंपनी
5. मेनेजेस, विवेक (15 मई 2021) https://www.holidify.com
6. द हिंदू, 26 अगस्त 2015 में प्रकाशित https://www.holidify.com
7. https://www.holidify.com
8. https://www.holidify.com
9. http://www.indianculture.gov.in
10. https://www.holidify.com
11. http://www.indianculture.gov.in
12. https://www.holidify.com
13. Culture of Goa in Hindi & Holidayrider.com
14. गोवा की संस्कृति, त्योहार, कार्यक्रम, भोजन www.visittnt.com.translate.goog